an>

Title: Need to take measures for promotion of betel vine farming in Mahoba, Uttar Pradesh.

कँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल (हमीरपुर) ः बुंदेलखण्ड क्षेत्र में आय का प्रमुख स्रोत कृषि है। पिछले कई दशकों से इस क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि अर्थव्यवस्था की हालत खस्ता है एवं रोज़गार के अन्य विकल्प न उपलब्ध होने पर लोग इस क्षेत्र से पलायन करने को मजबूर हैं। बुंदेलखण्ड में कृषि तकनीक उन्नयन, कृषि ढांचा विकास, निवेश, आसान ऋण उपलब्धता एवं सस्त कृषि बीमा योजना की आवश्यकता है। बुंदेलखण्ड क्षेत्र में कृषि खराब दौर के चक्रव्यूह से निरन्तर होने वाले समन्वित एकीकृत प्रयासों से ही बाहर आ सकती है। अभी हाल में ही किसानों को "" किसान हितैषी "" मोदी जी द्वारा घोषित नई फसल बीमा योजना एक रामवाण के रूप में मिली है जिसके उपरांत विपत्ति में घिरे किसानों को अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा।

बुंदेलखण्ड के महोबा में पान की खेती बहुत प्राचीन काल से होती आ रही है। महोबा का पान विश्व प्रसिद्ध है। पूर्ण नियंत्रित तरीके से होने वाली पान की खेती काफी खर्चीली है परन्तु इस खेती से बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर भी पैदा होते हैं, जिसके कारण पान की खेती बुंदेलखण्ड जैसे क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। महोबा में यह खेती सहकारी रूप में की जाती है जिसको 5-10 परिवार मिलकर करते हैं और यह आश्चर्यजनक रूप में इस क्षेत्र में लंबे समय से सफल है। इसी के साथ पान की खेती के लिए आद्रता और तापमान को नियंत्रित करने के लिए बनाये जानी वाली संरचनाएं यथा बरेजा और मंडप भारतीय परंपरागत कृषि के वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयोग का बेजोड़ उदाहरण है जिसका प्रयोग 2000 वर्ष पूर्व से इस क्षेत्र में होता आ रहा है और संभवतः कृषि में लोहे के प्रयोग के पश्चात् भारतीय संस्कृति द्वारा किया जाने वाला क्रांतिकारी प्रयोग है।

परन्तु पान जिसका धार्मिक, सांस्कृतिक, चिकित्सकीय एवं आर्थिक महत्व है, आज बुंदेलखण्ड में अपने अस्तित्व के लिए जूझ रहा है। पान की खेती के संरक्षण के लिए जहां बेहद कम दरों पर ऋण उपलब्धता, नवीन प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना से इसकी सम्बद्धता जरूरी है, वहीं महोबा में पान एक्सीलेंस सेंटर के साथ-साथ राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान की एक शाखा महोबा में तुरंत आरम्भ किये जाने की आवश्यकता है।